नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

जीएसटी संग्रह; अर्थव्यवस्था की सकारात्मक दिशा

बुधवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार जून माह में लगभग 1.95 लाख करोड़ रुपये का जीएसटी संग्रह हुआ है. दरअसल, यह भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का महत्वपूर्ण संकेत है. पिछले वर्ष की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि यह बताती है कि देश में आर्थिक गतिविधियां निरंतर गति पकड़ रही हैं. विशेष रूप से ऑटोमोबाइल और उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री में आई तेजी ने कर संग्रह को मजबूत आधार प्रदान किया है. चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में 6.32 लाख करोड़ रुपये का जीएसटी संग्रह भी इस बात का प्रमाण है कि भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भी अपनी विकास यात्रा बनाए हुए है.

जीएसटी संग्रह केवल सरकारी आय का आंकड़ा नहीं होता, बल्कि यह बाजार की वास्तविक स्थिति का भी दर्पण है. जब लोग अधिक खरीदारी करते हैं, उद्योग अधिक उत्पादन करते हैं और व्यापार में गति आती है, तब कर संग्रह स्वतः बढ़ता है. जून के आंकड़े इसी व्यापक आर्थिक गतिविधि की पुष्टि करते हैं. यात्री वाहनों की बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि, प्रमुख वाहन कंपनियों का बेहतर प्रदर्शन तथा उपभोक्ता वस्तुओं की बढ़ती मांग इस सकारात्मक माहौल को मजबूत करती है.

पिछले वर्ष जीएसटी दरों में किए गए संशोधन को लेकर कई आशंकाएं व्यक्त की गई थीं. अनेक वस्तुओं पर कर दर 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत करने के निर्णय को राजस्व के लिए जोखिम माना गया था. लेकिन अब यह स्पष्ट हो गया है कि कम कर दरों ने मांग बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. अधिक बिक्री के कारण कर आधार विस्तृत हुआ और कुल संग्रह में भी वृद्धि दर्ज हुई. यह अनुभव बताता है कि संतुलित कर व्यवस्था कई बार ऊंची कर दरों की तुलना में अधिक प्रभावी सिद्ध होती है. हालांकि राज्यों के आंकड़े एक समान तस्वीर प्रस्तुत नहीं करते. उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात और तेलंगाना जैसे राज्यों में कर संग्रह में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, झारखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में गिरावट चिंता का विषय है. यह अंतर बताता है कि देश के सभी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों की गति समान नहीं है. जिन राज्यों में संग्रह घटा है, वहां निवेश, औद्योगिक उत्पादन और उपभोग बढ़ाने के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता होगी.

एक अन्य उल्लेखनीय तथ्य आयात से प्राप्त जीएसटी राजस्व में 34 प्रतिशत की वृद्धि है. पश्चिम एशिया में जारी तनाव और वैश्विक व्यापार की चुनौतियों के बावजूद भारत का आयात-निर्यात तंत्र अपेक्षाकृत स्थिर बना हुआ है. यह देश की आर्थिक लचीलापन और मजबूत घरेलू मांग का संकेत भी देता है. सरकार द्वारा आयकर में राहत, बुनियादी ढांचे पर निवेश तथा उपभोग बढ़ाने वाले अन्य उपाय भी इस सकारात्मक वातावरण को बल दे रहे हैं. फिर भी केवल बढ़ते कर संग्रह से संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता. सरकार के सामने चुनौती यह है कि इस अतिरिक्त राजस्व का उपयोग उत्पादक निवेश, रोजगार सृजन, बुनियादी ढांचे के विस्तार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी प्राथमिकताओं पर किया जाए. साथ ही जीएसटी व्यवस्था को और सरल बनाना, छोटे व्यापारियों की अनुपालन लागत कम करना तथा राज्यों के साथ बेहतर समन्वय बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है.

जून का जीएसटी संग्रह यह संदेश देता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था सही दिशा में आगे बढ़ रही है. अब आवश्यकता इस बात की है कि इस गति को स्थायी बनाया जाए, ताकि आर्थिक विकास का लाभ देश के प्रत्येक राज्य, प्रत्येक उद्योग और प्रत्येक नागरिक तक समान रूप से पहुंच सके.

पीएम के विश्वसनीय सलाहकार अमित शाह

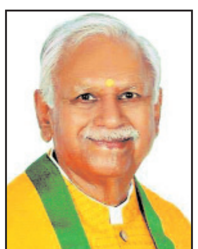
सुरेश पचौरी

> आज अनेक राजनीतिक विश्लेषक अमित शाह को समकालीन राजनीति का राजनीतिक चाणक्य कहते हैं. लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जटिल राजनीतिक परिस्थितियों को अवसर में बदलने, संगठन को निरंतर गतिशील बनाए रखने और चुनौतीपूर्ण राज्यों में पार्टी का विस्तार करने की उनकी क्षमता उन्हें विशिष्ट बनाती है. भाजपा और एनडीए के भीतर श्री शाह को प्रधानमंत्री जी का सबसे विश्वसनीय संकटमोचक के रूप में देखा जाता है. मेरे व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि अमित शाह की सबसे बड़ी शक्ति उनकी स्मरण क्षमता, अध्ययनशीलता, कार्यकर्ताओं के प्रति आत्मीयता और निर्णय लेने की क्षमता है. मेरे अनुभव में अमित शाह उन बिरले नेताओं में से एक हैं जिन्होंने संगठन, चुनावी रणनीति, शासन, राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक विस्तार—इन सभी क्षेत्रों में अपनी गहरी छाप छोड़ी है. यही किसी भी सफल राजनीतिक रणनीतिकार की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है.

भारतीय राजनीति में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनका मूल्यांकन केवल उनके पदों से नहीं, बल्कि उनके निर्णयों, संगठन निर्माण की क्षमता से किया जाता है. मेरे सार्वजनिक जीवन के छह दशकों में मुझे अनेक प्रधानमंत्रियों, केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों और विभिन्न दलों के शीर्ष नेताओं के साथ निकटता से काम करने का अवसर मिला है. जब मैंने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की, तदोपरांत पहली बार दिल्ली स्थित अमित शाह जी के निवास पर मुझे मिलने का अवसर मिला. यह मेरे लिए अत्यंत सुखद और आश्चर्यजनक अनुभव था.

हमारी पहली औपचारिक मुलाकात से पहले ही उन्हें मेरे सार्वजनिक जीवन, कांग्रेस संगठन में मेरी भूमिका, संसदीय अनुभव और राजनीतिक यात्रा की विस्तृत जानकारी ले रखी थी. मुझे स्पष्ट हो गया कि वे किसी व्यक्ति से मिलने से पहले उसकी पूरी जानकारी करते हैं. यह उनकी कार्यशैली की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है—तैयारी, तथ्य, अध्ययन और सूक्ष्म विश्लेषण. मेरे लंबे राजनीतिक जीवन में मैंने अनेक कुशल प्रशासकों और रणनीतिकारों को देखा है, लेकिन अमित शाह जैसा लौहपुरुष गृह मंत्री और राजनीतिक रणनीतिकार बिरले ही होते हैं. वे केवल घटनाओं पर प्रतिक्रिया नहीं देते, बल्कि उनकी दिशा और संभावनाओं आँकलन कर संगठन और सरकार—दोनों को उसी अनुरूप तैयार करते हैं. सन 2014 का लोकसभा चुनाव भारतीय राजनीति का निर्णायक मोड़ था. उस समय वर्तमान यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के सामने परिवर्तन, विकास और नए विश्वास का चेहरा थे, लेकिन उस जनसमर्थन को बूथ स्तर तक संगठित कर ऐतिहासिक जनादेश में परिवर्तित करने वाले प्रमुख रणनीतिकार अमित शाह थे. उत्तर प्रदेश में उनके मार्गदर्शन में भाजपा ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की और उसी विजय ने केंद्र में पूर्ण बहुमत की सरकार का मार्ग प्रशस्त किया. इसके बाद 2017 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में मिली ऐतिहासिक सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि यह केवल चुनावी लहर नहीं थी, बल्कि सुदृढ़ संगठन, सूक्ष्म प्रबंधन और देवतुल्य कार्यकर्ता-आधारित राजनीति का परिणाम था.

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्री अमित शाह ने भारतीय जनता पार्टी को केवल एक राजनीतिक दल नहीं रहने दिया, बल्कि उसे विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राजनीतिक संगठन बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई. बूथ सशक्तिकरण, सदस्यता अभियान, पन्ना प्रमुख जैसी अवधारणाओं को प्रभावी ढंग से लागू कर उन्होंने संगठन को गांव-गांव तक पहुँचाया. आज भाजपा का देश के लगभग प्रत्येक राज्य में संगठनात्मक आधार दिखाई देता है और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन निरंतर विस्तार की दिशा में आगे बढ़ा है.

अमित शाह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल चुनाव जीतने की रणनीति नहीं बनाते, बल्कि भारत के राजनीतिक भूगोल को बदलने की दीर्घकालिक योजना पर काम करते हैं. महाराष्ट्र, बिहार, हरियाणा, उत्तर-पूर्व, ओडिशा और अन्य राज्यों में भाजपा तथा एनडीए का विस्तार इसी सोच का परिणाम माना जा सकता है. राज्यसभा में भाजपा और एनडीए की लगातार मजबूत होती स्थिति भी श्री शाह की दूरगामी सुनियोजित राजनीतिक रणनीति का परिणाम है.

दक्षिण भारत, जिसे कभी भाजपा के लिए सबसे कठिन क्षेत्र माना जाता था, आज वहाँ भी पार्टी लगातार अपनी उपस्थिति मजबूत कर रही है. यदि उनके सार्वजनिक जीवन की ऐतिहासिक उपलब्धियों का उल्लेख किया जाए, तो अनुच्छेद 370 और 35ए को हटाने का निर्णय स्वतंत्र भारत के सबसे महत्वपूर्ण संवैधानिक निर्णयों में गिना जाएगा. दशकों से लंबित विषय पर जिस दृढ़ता और स्पष्टता के साथ श्री शाह के द्वारा जो निर्णय लिया गया, उसने भारतीय राजनीति की दिशा बदल दी. राष्ट्रीय एकीकरण के प्रश्न पर यह निर्णय लंबे समय तक चर्चा और अध्ययन का विषय रहेगा.

(लेखक भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय रक्षा उत्पादन, कार्मिक व संसदीय कार्य राज्य मंत्री हैं)

महाकौशल की डायरी

लापता विधायक के पोस्टर से गरमाई सियासत

अविनाश दीक्षित

छिंदवाड़ा की सियासत में बीते दिनों तब नया मोड़ आ गया जब वहां के ग्राम जैतपुर में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को लेकर लगाए गए लापता विधायक के पोस्टर सुर्खियां बने. मामला हालिया है जहां जैतपुर जैसे गांव के अनेक स्थानों में यह पोस्टर लगाए गए और उनके जरिए आरोप लगाए गए कि कमलनाथ क्षेत्र में ना तो आए हैं वरन जनता की समस्याओं से भी दूरी बनाए हुए हैं. दरअसल बारिश की लेट लतीफी से क्षेत्र में जल संकट आसन है और क्षेत्रीय विधायक होने के बावजूद कमलनाथ इस विषय को लेकर सक्रिय नजर नहीं आ रहे हैं. इन हालातों का फायदा भाजपा उठाने की जुगत में है.

सर्वविदित है कि कमलनाथ की वजह से छिंदवाड़ा दशकों से कांग्रेस का मजबूत गढ़ बना रहा है, लेकिन बीते लोकसभा चुनाव में भाजपा ने पूरी ताकत झोंकते हुए यहां अपना कब्जा जमा लिया था, उसके बाद से छिंदवाड़ा लोकसभा क्षेत्र की राजनीति में लगातार बड़े बदलाव देखे जा रहे हैं. नगरीय निकायों से लेकर पंचायत तक नए सियासती समीकरण बन रहे हैं. एक ओर भाजपा जहां अपनी पैठ को और मजबूत करने की कोशिश में लगी हुई है वहीं कांग्रेस अपने वोट बैंक को बचाने के लिए जद्दोजहद कर रही है. मौजूदा परिदृश्य इसी से जोड़कर देखा जा रहा है.

क्लोन मशीनों से बन गए आतंकियों के आधार..

हाल ही में हुए खुलासे से जबलपुर सहित संभाग के अनेक जिलों के लोगों की चिंता और बढ़ गई हैं. मामला बीएसएनएल से जुड़ा है, जिसके दस्तावेजों में जिक्र है कि जबलपुर सहित संभाग के बालाघाट, मंडला, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा में भारतीय संचार निगम लिमिटेड की आधार मशीनों का अवैध उपयोग कर आतंकियों के आधार कार्ड बनाए गए हैं. हैरानी की बात यह है कि यह कुचक्र हालिया नहीं बल्कि 2023 से जारी है और वह भी प्रदेश के 15 जिलों में. सूत्रों के अनुसार 2023 के दिसंबर माह में भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने एक पत्र बीएसएनएल को भेजा था, जिसमें उक्त जानकारी दी गई थी.

पिछले दिनों भारतीय संचार निगम के मध्य प्रदेश के महाप्रबंधक मिथिलेश कुमार का दावा सार्वजनिक हुआ है कि भारतीय विशिष्ट पहचान पत्र प्राधिकरण का पत्र मिलने के बाद बीएसएनएल ने संबंधित मशीनों पर रोक लगा दी थी और यह सुनिश्चित किया गया कि मध्य प्रदेश के अधिकार क्षेत्र की कोई भी मशीन राज्य के बाहर काम नहीं कर सकेंगी. विभागीय सूत्रों के अनुसार उनसे पूछा गया कि उपरोक्त जानकारी मिलने के बाद उनके विभाग द्वारा एफ आई आर क्यों दर्ज नहीं कराई गई, जिस पर महाप्रबंधक का कहना था कि इसका जवाब भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ही दे सकता है. मामले में चिंताजनक पहलू यह है कि इस मसले के सामने आने के बाद जो गंभीरता बरती जाना चाहिए थी वह अभी तक नदारत है.

रादुविवि से विद्यार्थियों का हो रहा मोहभंग...

जबलपुर के रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से क्या विद्यार्थियों का मोह भंग हो रहा है...? यह सवाल विश्वविद्यालय की गलियारों में तेजी से कोंध रहा है. दरअसल प्रवेश प्रक्रिया शुरू हुए दो माह बीत चुके हैं मगर रादुविवि के अधिकतर पाठ्यक्रमों की सीट अभी भी खाली पड़ी हुई हैं. चार दिन पूर्व तक कुल 5946 सीटों के मुकाबले महज 509 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है जबकि 5437 सीट अभी भी खाली पड़ी हुई हैं . लगभग 91 प्रतिशत रिक्त पड़ी सीटों से रादुविवि की प्रवेश रणनीति और शैक्षिक प्रबंधन पर सवाल उठ रहे हैं. जानकारों का मानना है कि इस बार प्रवेश प्रक्रिया को लेकर प्रचार प्रसार का अभाव, स्कूल कॉलेज में पहुंचकर विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमों की जानकारी न देने को कारण माना जा रहा है. कम प्रवेश का असर विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति पर पड़ेगा, यह तकरीबन तय हो चुका है, क्योंकि अधिकांश स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम छात्रों की फीस पर निर्भर हैं. यह देखना दिलचस्प होगा कि रादुविवि प्रबंधन इस समस्या से कैसे निपट पाता है.

शिवसेना (उद्धव) के सामने गंभीर चुनौती

आज ऐसी स्थिति है कि राजनीतिक दलों के मुखिया को अपना कुनबा संभालने की चुनौती से जूझना पड़ रहा है. एक समय महाराष्ट्र की राजनीति में जबरदस्त प्रभाव रखने वाली शिवसेना के सामने अस्तित्व का संकट देखा जा रहा है. सांसदों की फूट के बाद अब विधानपरिषद सदस्य सचिन अहीर ने पाला बदल लिया. उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना विभिन्न कारणों से कमजोर हुई. बीजेपी के साथ युति तोड़ना उसे महंगा पड़ा जबकि उस समय बीजेपी का राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर भी प्रभाव मजबूत होता जा रहा था. उद्धव ठाकरे को पार्टी के विधायकों व संगठन को एकजुट रख पाने में विफलता मिली. उनकी आंख के सामने 'ऑपरेशन लोटस' के तहत बीजेपी ने एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में बगावत करवाई और एक बड़ा समूह अलग हो गया. 2022 में हुई बगावत के बाद सदन के दावपेंच व नियमों का राजनीतिक लाभ न उठाते हुए सीधे इस्तीफा देना महंगा पड़ा. भावनात्मक अपील व पुराने संबंधों के बल पर कोई भी पार्टी अब दीर्घकाल तक टिक नहीं सकती. 2019 में बीजेपी-शिवसेना युति ने विधानसभा चुनाव लड़ा था, जिसमें युति को स्पष्ट बहुमत मिला था. इसके बाद मुख्यमंत्री पद को लेकर मतभेद हुआ और उद्धव ने बीजेपी से युति तोड़कर कांग्रेस व एनसीपी के साथ मिलकर महाविकास आघाड़ी सरकार बनाई थी. इससे हिंदुत्ववादी मतदाताओं को बुरा लगा तथा पार्टी की वैचारिक पहचान को क्षति पहुंची. 2022 से ही विधायक व नेताओं में नाराजगी बनी हुई थी. बगावत के बाद शिंदे की पार्टी को अधिकृत शिवसेना का दर्जा व धनुषबाण चुनाव चिन्ह मिल गया. उद्धव सेना को लोकसभा चुनाव में सफलता मिली, लेकिन कुछ माह बाद हुए विधानसभा चुनाव में गहरा आघात पहुंचा. अब यदि पार्टी को मजबूत बनाना है तो उद्धव ठाकरे व आदित्य ठाकरे को राज्य भर में दौरा कर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाना होगा. जिला व तहसील स्तर पर पार्टी मजबूत करते हुए किसानों, महिलाओं व युवाओं का समर्थन हासिल करना होगा. नए चेहरों को अवसर देते हुए जनसमस्याओं को लेकर निरंतर संघर्ष करने से पार्टी फिर मजबूत हो सकती है. विपक्षी एकता की दिशा में यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए तो क्षेत्रीय पार्टियों को संभल पाना मुश्किल हो जाएगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बागियों को बीजेपी का सहारा विपक्षी दलों में फूट का नजारा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हम लगातार आ रही टूट-फूट की खबरों से परेशान हैं. कभी परीक्षाओं के पेपर फूटते हैं, तो कभी कोई अच्छी-भली पार्टी फूट जाती है. विधायक व सांसद फूटकर अलग गुट बनाते या सत्तारूढ़ पार्टी में शामिल हो जाते हैं. विपक्षी नेताओं की किस्मत फूटती चली जा रही है और बीजेपी की तकदीर का सितारा बुलंद होता जा रहा है.'

हमने कहा, 'टूट-फूट से घबराने की आवश्यकता नहीं है. घरों में शीशे की बोतलें, कप-सॉसर, क्रॉकरी, डिनर सेट हाथ से फिसलते ही टूट जाते हैं. आपने गीत सुना होगा- शीशा हो या दिल हो, आखिर टूट जाता है! खेल में पुराने रिकार्ड टूट जाते हैं. आर्थोपीडिक डॉक्टर रास्ता देखते रहते हैं कि गड्ढे वाली सड़क में किसी के हाथ-पैर की हड्डी टूटे और वह उनके पास इलाज के लिए आए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यदि चीजें टूटेंगी नहीं तो नई वस्तुओं का सृजन कैसे होगा? विध्वंस और निर्माण प्रकृति की लीला है. 4 युग बीतने के बाद प्रलय होता है और फिर से ब्रम्हा को नई सृष्टि का निर्माण करना पड़ता है. टूट-फूट या तोड़-फोड़ होती रहनी चाहिए. भगवान राम ने भी तो राजा जनक की सभा में शिव का धनुष तोड़ा था. रही बात एक पार्टी छोड़कर दूसरी जॉइन करने की, तो ऐसा पहले भी होता रहा है. आम्भी ने पोरस से गद्दारी कर सिकंदर का साथ दिया था. जयचंद ने पृथ्वीराज को दगा देकर मोहम्मद गोरी से हाथ मिला लिया था. मीर जाफर ने नवाब सिराजुद्दौला से दगाबाजी कर ईस्ट इंडिया कंपनी का साथ दिया था. कुछ लोग खुद्दार होते हैं तो कुछ गद्दार! इनके बगैर इतिहास नहीं बनता.'

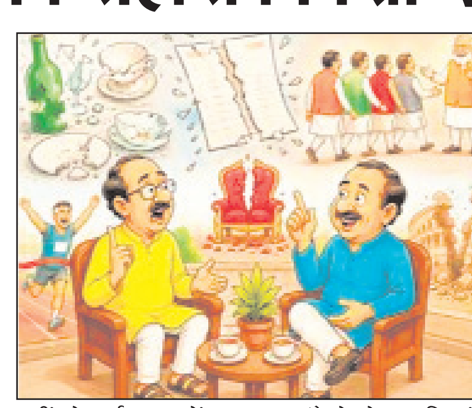

हमने कहा, 'मौकापरस्त या अवसरवादी नेता धन के लोभ या पद के मोह में पड़कर अपनी पार्टी से विश्वासघात करते हैं. देश में विपक्ष लगातार टूट रहा है. ममता, केजरीवाल और उद्धव ठाकरे की पार्टियों में पतझड़ आ गया. बगावत करने वाले बीजेपी की गोद में बैठ रहे हैं. विपक्षी नेताओं का दिल कह रहा है- वफा जिनसे की, बेवफा हो गए, वो वादे मोहब्बत के क्या हो गए!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12307 - डॉ. सागर खादीवाला

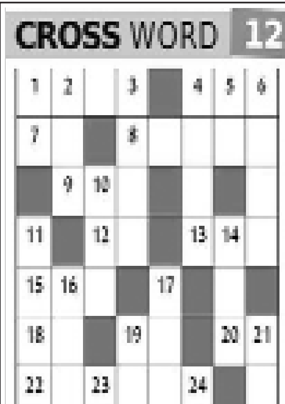

बाएं से दाएं
1. पांडवों में कुंती के दूसरे पुत्र 4. रुकावट डालने वाला (सं.) 7. एक पेड़ जिसके सारे अंग कड़वे होते हैं 8. वह नींबू जिसका छिलका पतला होता है 9. भवन निर्माण का काम 12. एक अन्न, चणक 13. ईख के रस में पकाए हुए चावल 15. भोग विलास के निमित्त कहीं ठहरना, लीन होना 18. पानी 19. समाप्ति, मृत्यु 20. भय आदि के कारण हृदय गति तीव्र होने का भाव या शब्द 22. जाना और आना, यातायात 25. असल चीज, मूल, जड़, मूलधन, पूंजी (सं.) 26. गरीबी, नम्रता

ऊपर से नीचे
1. मीठी, हलकी (सुगंध) 2. अपना समझने का भाव, स्नेह 3. अस्वीकृत करना, 'नहीं' कहना या करना 4. जादू का खेल करने वाला 5. धनवान, दौलतमंद, स्वामी 6. कपोत 10. आंखें मूंदना या बंद करना 11. सूर्य तथा उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों का समूह या वर्ग जो आकाशचारी पिंडों में स्वतंत्र इकाई के रूप में माना जाता है 14. शपथ, कसम 16. बारीक सूत का बना बारीक कपड़ा 17. मृतक का शोक 19. बाली का पुत्र, लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम 21. छंदोबद्ध रसमय रचना 23. माप, नापने का काम 24. सरिता, दरिया

Solution 12306

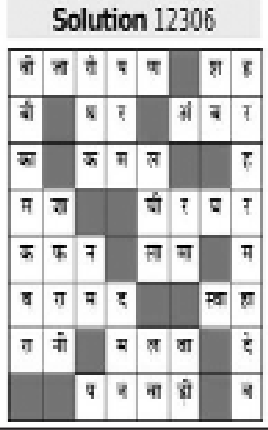

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा. मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा. वाहन पशु आदि से लाभ होगा. आर्थिक क्षेत्र में कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी. वर्ष के अन्त में वाणी में कठोरता एवं क्रोध में वृद्धि होगी. प्रियजनों के कारण हानि हो सकती है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को वाहन पशु आदि का लाभ होगा, भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में पूँजी निवेश होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को प्रियजनों की वाणी में कठोरता एवं क्रोध में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को योजनाओं में बाधा होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी रखना हितकर रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सराहनीय कार्यो का लाभ मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, उदारहृदय का परोपकारी होगा. साहित्य एवं कला में विशेष योग्यता रहेगी. एक बार जो निर्णय कर लेगा, उसी पर अटल रहेगा. भाग्यवान एवं सहनशील रहेगा. हर कार्य को दिल से करेगा. माता पिता का भक्त होगा.

मेष- दुविधा की स्थिति में वृषभे बढ़ने में मुश्किल हो सकती है, कार्य विस्तार की रूपरेखा बनेगी, आध्यात्मिक एवं रचनात्मक कार्यों में रूचि रहेगी.

वृषभ- अपने रिश्तों को थोड़ा वक्त दें, राह की उलझन दूर होगी, रक्त विकार उदर विकार से बचें, खानपान पर संयम रखें, बाहरी व्यक्ति पर भरोसा न करें.

मिथुन- मानसिक तनाव के चलते अशांति बनी रहेगी, व्यापारिक सौदे लाभदायी हो सकते हैं. परिश्रम की अधिकता रहेगी, आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

कर्क- न चाहते हुये भी समझौता करना पड़ सकता है, कानूनी मामलों में दूसरों की सलाह से आगे बढें. न्यायालयीन प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, अतिथि आगमन का योग है.

सिंह- दूसरों की सलाह से वृषभे बढ़ें, सफ्लता मिलेगी, शिक्षा संतान के कार्यों में सफ्लता मिलेगी, शत्रु वर्ग पर विजय प्राप्त होगी. भय एवं तनाव दूर होगा.

कन्या- परिणय की चर्चाओं में सफ्लता मिल सकती है, बिगड़े कार्य को पूरा करने में परेशानी होगी, जोखिम के कार्यों में विशेष सावधानी रखें, अत्यन्त व्यस्तता रहेगी.

तुला- नजदीकी लोगों के कारण मन परेशान रहेगा. श्रम से महत्वपूर्ण काम बनेगा, सामाजिक शत्रुओं का पराभव होगा, आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

वृश्चिक- पारिवारिक आयोजन सुखद रहेगा, भाग्य से अच्छे अवसर आ सकते हैं, नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी, वास्ते सावधानी रखें. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा.

धनु- परिचितों के कारण काम में मुश्किल आयेगी, दुविधा की स्थिति से बाहर निकलें लाभ होगा. शारीरिक सुख एवं मानसिक प्रसन्त्ता रहेगी.

मकर- अपनी की गई गलती का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है, जीवन में मान-सम्मान बढ़ेगा. सोचे कार्य बनने का योग है, आय से अधिक धन व्यय होगा.

कुम्भ- कैरिअर में उतार-चढ़ाव बना रहने से चिन्ता बढ़ेगी, जमकर जायजाद के कार्यों में लाभ होगा, धार्मिक यात्रा होगी, रूके कार्य बनने का योग है, प्रसन्नता रहेगी.

मीन- बिखरे कार्यों को समेटने में परिवार की अच्छी मदद मिलेगी, किसी की जवाबदारी न लें, नौकरी पदोन्नति एवं स्थानांतरण की समस्या का समाधान होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

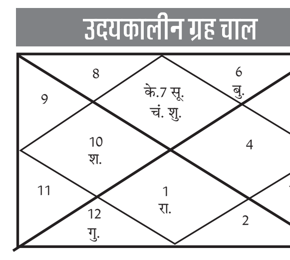

पंचांग

रा.मि. 12 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण तृतीया भृगुवासरे दिन 9/3, श्रवण नक्षत्रे दिन 10/29, विष्कुम्भ योगे दिन 4/21, विष्टि करणे सू.उ. 5/14, सू.अ. 6/46, चन्द्रचार मकर रात 11.8 से कुम्भ, पर्व- संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण तृतीया को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र, हैसियन, खांड में तेजी होगी. आज 12 बजकर 2 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 5484 है.

SUDOKU 7439

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

• प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. • पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. • पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7438

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1